मालावी : बांदा की पकड़ ढीली पड़ रही है

मालावी के राष्ट्रपति डा. हेस्टिंग्स कुमुजू बांदा अफ्रीका में सबसे ज्यादा समय तक सत्तारूढ़ रहने वाले नेताओं मे से है। मध्य अफ्रीका मे सामरिक दृष्टि से सबसे बढ़िया भूभाग पर स्थित मालावी (पहले का नाम न्यासालैंड) के शासन की बागडोर १९६० से ही उनके हाथ में है और १९६४ में मालावी के ब्रिटेन से स्वंत्र होने के समय से लगातार वे उसके राष्ट्रपति है।

परंतु पिछले कुछ महीनों से मालावी में राजनीतिक घटनाक्रम कुछ इस तरह बदला है, जिससे प्रकट होता है कि राष्ट्रपति बांदा की स्थिति कमजोर पड़ रही है और सत्ता पर उनका प्रभाव कम होता जा रहा है। यह स्थिति उनकी उम्र की वजह से पैदा हुई हो, ऐसी बात नहीं है, क्योंकि बांदा ७० वर्ष के होते हुए भी पूर्ण स्वस्थ और जोशीले हैं।

असल में अफ्रीकी देश कई वर्षों से डा. बांदा को चलता करने की साजिश में लगे हुए हैं। इसका कारण यह है कि १९६० में लंदन की अपनी मेडिकल प्रैक्टिस छोड़कर मालावी की राजनीति में कूदने के बाद डा. बांदा ने सर्वप्रथम 'अफ्रीकी महासंघ' को तोड़ने की कोशिश की। उस समय दक्षिण रोडेशिया (आज का जिंबाब्वे), न्यासालैंड (मालावी) और उत्तर रोडेशिया (आज का जंबिया) का महासंघ बना हुआ था। उसके संघीय प्रधानमंत्री सर रॉय वेलेंस्की उस समय दक्षिणी अफ्रीका के सबसे शक्तिशाली शासक थे। बांदा ने उनके खिलाफ जिहाद छेड़ा। यही नहीं, राष्ट्रपति बनते ही उन्होंने सबसे पहले मालावी को सारे गुटों से एकदम अलग कर दिया।

मिस्र की तरह मालावी की स्थिति सामरिक दृष्टि से थोड़ी मजबूत होने के कारण बांदा ने शेष अफ्रीकी देशों को खास महत्व नहीं दिया जबकि केनेथ कोंडा (जंबिया) तथा रॉबर्ट मुगाबे (जिंबाब्वे) जैसे राजनेता ब्रिटेन और अमरीका के औपनिवेशिक मंसूबों का शिकार बनने से बचने के लिए आपस में एकता बनाये रखना चाहते थे।

पहले तो कौंडा और मुगाबे ने डा. बांदा को अपना सीधा माना था, क्योंकि वे जानते थे कि उनके सहयोग से ब्रिटेन के औपनिवेशिक शिकंजे से मुक्ति पाने में आसानी होगी और जैसी कि आशा थी, डा. बांदा ने भी हर तरह का सहयोग दिया। मगर स्थिति अनुकूल होते ही उन्होंने पैंतरा बदला। वे गोरों का साथ देने लगे, जिन्हें हटाकर वे सत्तारूढ़ हुए थे। कठिन संघर्ष के बाद आजादी हासिल करने वाले अफ्रीकी देशों के शासकों को उन्होंने अपने बराबर नहीं समझा और उनसे किनारा कर लिया। उनकी तानाशाही प्रवृत्ति भी उभरकर सामने आयी और उन्होंने अपने विरोधियों को बिना अदालती कार्रवाई के गोली मार देने की नीति अपना ली।

डा. बांदा ने अपने राष्ट्र को अफ्रीकी एकता संगठन (ओ.ए.यू.) से भी अलग कर लिया। आज तो पूरे अफ्रीका में वे ही ऐसे एकमात्र शासक हैं, जिन्होंने प्रिटोरिया की रंगभेदी सरकार के साथ कूटनीतिक संबंध बना रखा है। उन्होंने अपने उन मित्रों को देश निकाला दे दिया, जिन्होंने यह राय दी थी कि ओ.ए.यू. में बने रहना मालावी के हित में है और प्रिटोरिया सरकार से दोस्ती करना खतरनाक है। इसी सलाह के लिए उनके विशेष राजनीतिक सलाहकार और

शशिधर खां

मालावी केंद्रीय विश्वविद्यालय के विश्व-राजनीति के विशेषज्ञ डा. रॉबर्ट्स वेलांडी आजकल नजरबंद हैं। बांदा से उन्होंने कहा था कि दक्षिण अफ्रीका से सहायता मिलने के बावजूद उसकी दोस्ती हमारे लिए हितकारी नहीं है।

इन्हीं सब बातों का यह परिणाम है कि राष्ट्रपति बांदा के जो मित्र पहले बड़े गर्व से उन्हें 'अफ्रीका का गरजता सिंह' कहा करते थे, वही अब उनके कट्टर शत्रु बन गये हैं। शायद अब बांदा की आंखें खुलें, क्योंकि प्रिटोरिया सरकार ने जोकि पहले अमरीका और ब्रिटेन की प्रेरणा से मालावी को अपना एकमात्र भरोसेमंद मित्र कहा करती थी, अब बांदा के विशेष दूत को प्रिटोरिया से वापस भेजने की धमकी दे डाली है।

ताजा स्थिति यह है कि राष्ट्रपति बांदा के विरोधियों की संख्या बढ़ती जा रही है। ब्रिटेन और अमरीका को इस बात का बड़ा संतोष था कि अफ्रीका का एक शक्तिशाली देश उनके खेमे में है और उसके माध्यम से अफ्रीकी राजनीति में उनका दबदबा है। पर अफ्रीकी देशों ने मानों डा. बांदा को हटाने के लिए कमर कस ली है। सो ब्रिटेन और अमरीका डा. बांदा की जगह कोई ऐसा व्यक्ति बैठाना चाहते हैं जो उन्हीं की तरह पश्चिम का पिछलग्गू बना रहे। दूसरी ओर अफ्रीकी देश मालावी को अब अपने खेमे में लाने के लिए दिन रात एक किये हुये हैं। दोनों ही खेमें अंदर और बाहर से मालावी को तोड़ने में लग गये हैं और उनके भेजे हुए घुसपैठियों की मदद स्वयं मालावी की जनता कर रही है, जिससे वे ताकतवर होते जा रहे हैं।

डा. बांदा को अपना अस्तित्व खतरे में नजर आ रहा है। पर वे किसी से सहायता भांगने के काबिल नहीं रहे हैं। जिन अवसरवादी ताकतों को उन्होंने अपना हितैषी समझा था, वे ही अब मालावी में सत्ता-परिवर्तन के लिए बेताब हैं, वाकई डा. बांदा का हटना दक्षिणी अफ्रीका में एक युग की समाप्ति जैसा होगा।

सबसे बड़ा सदमा डा. बांदा को पिछले वर्ष नवंबर के अंत में लगा, जब एम.एन. आर. गेरिल्लों ने मालावी में घरेलू उड्डयन भर रहे एक चार्टर्ड विमान को गोली मारकर गिरा दिया और दस यात्रियों की मृत्यु हो गयी जिनमें से तीन ब्रिटिश व्यापारी थे। काफी प्रत्यत्नों के बावजूद एक भी गेरिल्ला पकड़ में नहीं आ सका।

अब तो एम. एन. आर. गेरिल्लों ने बांदा के खिलाफ खुला युद्ध छेड़ दिया है और मोजांबिक की सरकार को गिराने पर तो वे तुले हुए हैं ही। चारों तरफ से डा. बांदा अपने को लाचार महसूसकर रहे हैं और उनके पास इसके सिवा कोई चारा नहीं रह गया है कि उन्हीं देशों के सामने हाथ फैलाएं जिनके खिलाफ उन्होंने गोरी सरकारों की मदद की थी। मगर वे स्वभाव से जिद्दी और अड़ियल हैं और एम.एन. आर. के प्रति अपनी भावी नीति अभी तक तै नहीं कर पाये हैं। उनके सामने प्रश्न है कि वे सहायता मांगें तो किससे, और इसकी भी क्या गारंटी है कि वे मिल जायेंगी।?

पिछले वर्ष दिसंबर में मोजांबिक, जिंबाब्वे, जंबिया और तांजानिया के राष्ट्रध्यक्ष मालावी गये थे और उन्होंने एम. एन. आर. गेरिल्लों को सहायता देना बंद करने का आग्रह डा. बांदा से किया था तथा यह चेतावनी भी दी थी कि अगर वे अपनी नीति नहीं बदलेंगे, तो गंभीर परिणाम होंगे। उन राष्ट्रध्यक्षों ने बांदा को आगाह किया था कि मालावी पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिये जायेंगे और भड़ैती गेरिल्लों को पैसे और हथियार देकर उनके विरुद्ध उकसाया जायेगा।

अभी फरवरी में मोजांबिक के राष्ट्रपति दुबारा मालावी गये और उन्होंने बांदा से कड़े शब्दों में कहा कि अगर आपने शीघ्र अपनी नीति नहीं बदली, तो हम मालावी में स्थित एम.एन.आर. के ठिकानों पर प्रक्षेपास्त्रों से हमला करेंगे और युद्ध की घोषणा कर दी जायेगी। मोजांबिक को सोवियत संघ और पूर्व जर्मनी का समर्थन प्राप्त है।

डा. बांदा को मोजांबिक की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाना ही होगा, क्योंकि जैसे-जैसे उनकी स्थिति कमजोर होती जा रही है, मोजांबिक शक्तिशाली होता जा रहा है और फिलहाल मालावी को सबसे ज्यादा खतरा मोजांबिक से ही है।

ताजातरीन खबरों से ऐसा जान पड़ता है कि शायद डा. बांदा असमंजस में पड़े-पड़े ही राजनीतिक आकाश से लुप्त हो जायेंगे। राजनीतिक सरगरमी इतनी तेज हो गयी है कि किसी भी दिन उन्हें सत्ताच्युत किया जा सकता है। देश की डांवाडोल हालत देखते हुए वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी अब राष्ट्रपति से कुछ पूछने की जरूरत नहीं समझते। सबकी आंखें जॉन टेम्बो पर टिकी हैं।

सत्तारूढ़ मालावी कांग्रेस पार्टी (एम.सी.पी.) के महासचिव टेम्बो किसी जमाने में डा. बांदा के अत्यंत निकटवर्ती सलाहकार थे। इस समय परोक्ष रूप से शासन की बागडोर उन्हीं के हाथ में है। मंत्री तथा अधिकारी सीधे उनके आदेश से काम करने लगे हैं। ब्रिटेन, अमरीका और सोवियत संघ अपने विशेष दूत उनके पास भेजने लगे हैं, क्योंकि इस बात की पूरी संभावना है कि डा. बांदा का स्थान लेंगे।

टेम्बो की स्थिति मजबूत होने के दूसरे भी कारण हैं। वे मालावी रिजर्व बैंक के गवर्नर और आतंरिक मामलों के मंत्री रह चुके हैं। जनता की नब्ज पहचानकर उन्होंने दक्षिण सरकार को घास न डालने की नीति अपनायी है। वे सेसिलिया कादजमीरा के सगे मामा हैं और कहा जाता है कि सेसिलिया डा. बांदा के लिए वही हैं जो जहांगीर के लिए नूरजहां थी।

पर राष्ट्रपति बांदा इतनी आसानी से सत्ता से क्यों हटने लगे? वे बार-बार इसका खंडन कर रहे हैं कि शासन पर उनकी पकड़ ढीली पड़ रही है और उन्होंने परोक्ष रूप से जॉन टेम्बो के आगे घुटने टेक दिये हैं। (पे.इ.फीचर)

प्रभात खबर/रांची
9.4.88